DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Bara Chakia
BRABU – Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part – I
Subject – Sanskrit
Paper – I

5×3=15 Marks

कारक सूत्र-व्याख्या

28. भुवः प्रभवः (1/4/31)

भू धातु या प्रकट होने के कर्ता के उद्गमस्थान की अपादान संज्ञा होती है। जैसे—हिमालयात् गङ्गा प्रभवति (हिमालय से गंगा निकलती है)—यहाँ प्रकट होने का कर्ता गंगा है और उसका उद्गम स्थान हिमालय है, अतः उसकी 'भुवः प्रभवः' सूत्र से अपादान संज्ञा होने पर पञ्चमी हुई। यहाँ शंका होती है कि 'जनिकर्तुः प्रकृतिः' सूत्र से ही काम चल सकता था तब 'भुवः प्रभवः' सूत्र रचने की क्यों आवश्यकता पड़ी। इसका उत्तर मूल में 'प्रभवति' का अर्थ 'तत्र प्रकाशते' देकर कर दिया गया है। 'प्रभवति' का अर्थ है 'प्रथमं दृश्यते'। धातुओं के अनेकार्थक होने से इस अर्थ की उपलब्धि होती है। जो पहले कभी नहीं था उसका प्रादुर्भाव 'जनि' कहलाता है और जो वस्तु पहले से थी उसकी प्रथम बार प्राप्ति को 'प्रभव' कहते हैं। इस प्रकार अर्थभेद होने से 'भुवः प्रभवः' सूत्र की आवश्यकता पड़ी।